संजय की कलम से

दीपावली पर करें आत्म-चिन्तन

परमपिता परमात्मा ने अपनी वाणी के माध्यम से हमें सद्ज्ञान व शिक्षा देते हुए दीपावली मनाने का एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी समझाया है कि समदर्शी भाव से अपने दुर्गुणों का नाश करके सद्गुणों की वृद्धि करना ही दीपावली का उद्देश्य है। दीपावली पर स्थूल रूप से तो मकान की सफाई की जाती है परंतु वास्तव में यह आत्मा की सफाई का प्रतीकात्मक पर्व है।

प्राचीन साहित्य बताता है कि भारत कभी स्वर्ग था, यहाँ घी-दूध की नदियाँ बहा करती थीं, शेर-बकरी एक घाट पर पानी पीते थे। वह था सतयुग जहाँ सोलह कला संपूर्ण श्री कृष्ण तथा आनन्द स्वरूप देवतायें वास करते थे। उस समय हर घर में सच्ची दीपावली थी। परन्तु आज उसी भारत में सभी मानव प्राणी विकारों के अंधकार में ठोकरें खा रहे हैं। भारत को इस दुर्दशामय स्थिति से निकालने के लिए परमपिता परमात्मा सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान दे रहे हैं और राजयोग का अभ्यास करा रहे हैं। वर्तमान काल वह बहुमूल्य काल है जबकि ज्योति स्वरूप, परमधाम निवासी परमपिता परमात्मा साकार ब्रह्मा के तन द्वारा अर्थात् साकारी रूप में अवतरित होकर हम मानव आत्माओं को दिव्य ज्ञान, दिव्य शक्ति, दिव्य योग का वरदान दे रहे हैं और सूचना दे रहे हैं कि अभी भी समय है – जागो, उठो, अज्ञान निद्रा को त्यागो। इस सुनहरे अवसर का लाभ लेकर हम आत्मायें अपने आपको सच्ची रीति आलोकित कर सकते हैं।

दीपों से प्रज्वलित 'दीपावली' का यह त्योहार केवल किसी विशेष वर्ग का नहीं वरन् समस्त प्राणियों के लिए है। यह त्योहार केवल धनोपार्जन की संपन्नता का स्वरूप नहीं बल्कि आत्मावलोकन करते हुए आत्म-दर्शन का दिवस है कि जीवन में क्या भलाई और क्या बुराई है। इस पुनीत पर्व पर यदि हम सभी आत्माएँ निराकार ज्योतिबिंदु स्वरूप परमपिता की ओर ध्यान करके उनके गुणों – दया, प्रेम, पवित्रता, आनन्द, शान्ति को अपने जीवन में धारण करें तो यही परमात्मा पिता की ओर से हम बच्चों के लिए दीपावली की सौगात होगी। दीपावली हमें स्मरण कराने आती है कि संसार को सुखी संपन्न बनाने के लिए आत्मचिन्तन करके अपने मन का दीपक जगाकर देश, विदेश और संपूर्ण विश्व को सहयोग प्रदान कर दीपों की सजावट मात्र नहीं बल्कि वास्तविक रूप में आत्मा को ज्ञान से आलोकित करना है। यही श्री लक्ष्मी का वरदान होगा, यही त्योहार की सार्थकता है

❖

अमृत-सूची

* सम्मान के पात्र हैं वृद्ध (सम्पादकीय) 2
* पुरुषोत्तम संगमयुग 5
* सचित्र सेवा समाचार..... 7
* 'पत्र' सम्पादक के नाम 8
* जीवन में संयम की 9
* बीड़ी की शादी (कविता)..... 11
* बाबा ने दिया जीवनदान 12
* मतभेद भले हो, मनभेद नहीं... 13
* रावण के दस सिर..... 14
* इसे दीवाली कहते हैं (कविता) 15
* विवाह का उद्देश्य 16
* सब भेदों से परे..... 19
* करवा चौथ के व्रत का 21
* रावण कौन (कविता)..... 23
* माया ठगनी, हमने पहचानी 24
* राजयोग का जादू 25
* सचित्र सेवा समाचार..... 26
* राजयोग ने रोग हर लिया 28
* बाबा ने मेरा क्रोध छीन लिया.. 29
* सचित्र सेवा समाचार 30
* भटकाव के बाद 32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	70 /-	1,500/-
वर्ल्ड रिन्युअल	70/-	1,500/-
विदेश		
ज्ञानामृत	650 /-	6,500/-
वर्ल्ड रिन्युअल	650/-	6,500/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है-संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383